

परी लड़की

सच्ची कहानी पर आधारित

लॉरी फ्रीडमैन

चित्र: ओफ्रा अमित

हरमन एक लेबर कैंप में कैदी है. यह 1942 है, और नाज़ियों ने उसे कैदी बना लिया है. उसे लंबे घंटों तक काम करने के लिए मजबूर किया जाता है. उसका एकमात्र भोजन पानी जैसा सूप है. जल्द ही वह आगे जीने की इच्छा खो देता है. फिर वह प्रकट होती है. कांटेदार तार की बाड़ के दूसरी तरफ एक छोटी लड़की - एक परी लड़की, जो उसके सबसे निराशाजनक समय में भोजन और आशा लेकर आती है. वह एक चमत्कार की तरह लगती है. हरमन के लिए, चमत्कार अभी शुरू हुए हैं... ज़िंदा रहने की एक सच्ची कहानी पर आधारित, "एंजेल गर्ल" प्यार, उम्मीद और मानवीय भावना की ताकत की कहानी है.

परी लड़की

सच्ची कहानी पर आधारित

चित्र: ओफ़्रा अमित

सच्ची कहानी पर आधारित

लेखक का नोट

सबसे अच्छी परिस्थितियों में, बचपन एक खुशहाल समय होता है जब एक युवा व्यक्ति के दिन खेलने, सपने देखने, सीखने, खोज करने और कल्पना करने में बीतते हैं. आदर्श रूप से, बच्चे परिवार और दोस्तों की गर्मजोशी और प्यार से घिरे हुए बड़े होते हैं, एक आरामदायक जगह की सुरक्षा में जिसे वे घर कहते हैं.

लेकिन द्वितीय विश्व युद्ध (1939-1945) के दौरान यूरोप में पले-बढ़े यहूदी बच्चों को ऐसी कोई खुशी मुहैय्या नहीं थी. इन बच्चों के लिए, बचपन निराशा से भरा था. उन्हें उनके घरों से निकाल दिया गया था. उन्होंने अपने माता-पिता और भाई-बहनों की हत्या देखी थी. उन्हें भुखमरी, बीमारी, क्रूर श्रम और गैस चेम्बरों द्वारा मौत का सामना करना पड़ा था.

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, एडॉल्फ हिटलर और नाज़ियों द्वारा 16 लाख यहूदी बच्चों को मार डाला गया था. ये संख्याएँ चौंका देने वाली हैं, लेकिन संख्याओं के पीछे की कहानियाँ और भी दर्दनाक हैं.

युद्ध से जितने लोग प्रभावित हुए, उनकी उतनी ही कहानियाँ हैं. अधिकांश बहुत दुखद हैं. आप जो पढ़ने जा रहे हैं वह हरमन नाम के एक असली लड़के की कहानी है. जब मैंने पहली बार उसकी कहानी सुनी, तो मैं रो पड़ी - इसलिए नहीं कि इसकी शुरुआत बहुत दुखद थी, बल्कि इसलिए कि उसका अंत अविश्वसनीय रूप से सुखद था.

लॉरी फ्राइडमैन

"महिलाएं, बच्चे दाईं ओर. पुरुष बाईं ओर."

जूते बजने लगे. बंदूकें तनने लगीं. आदेश जारी किए गए.

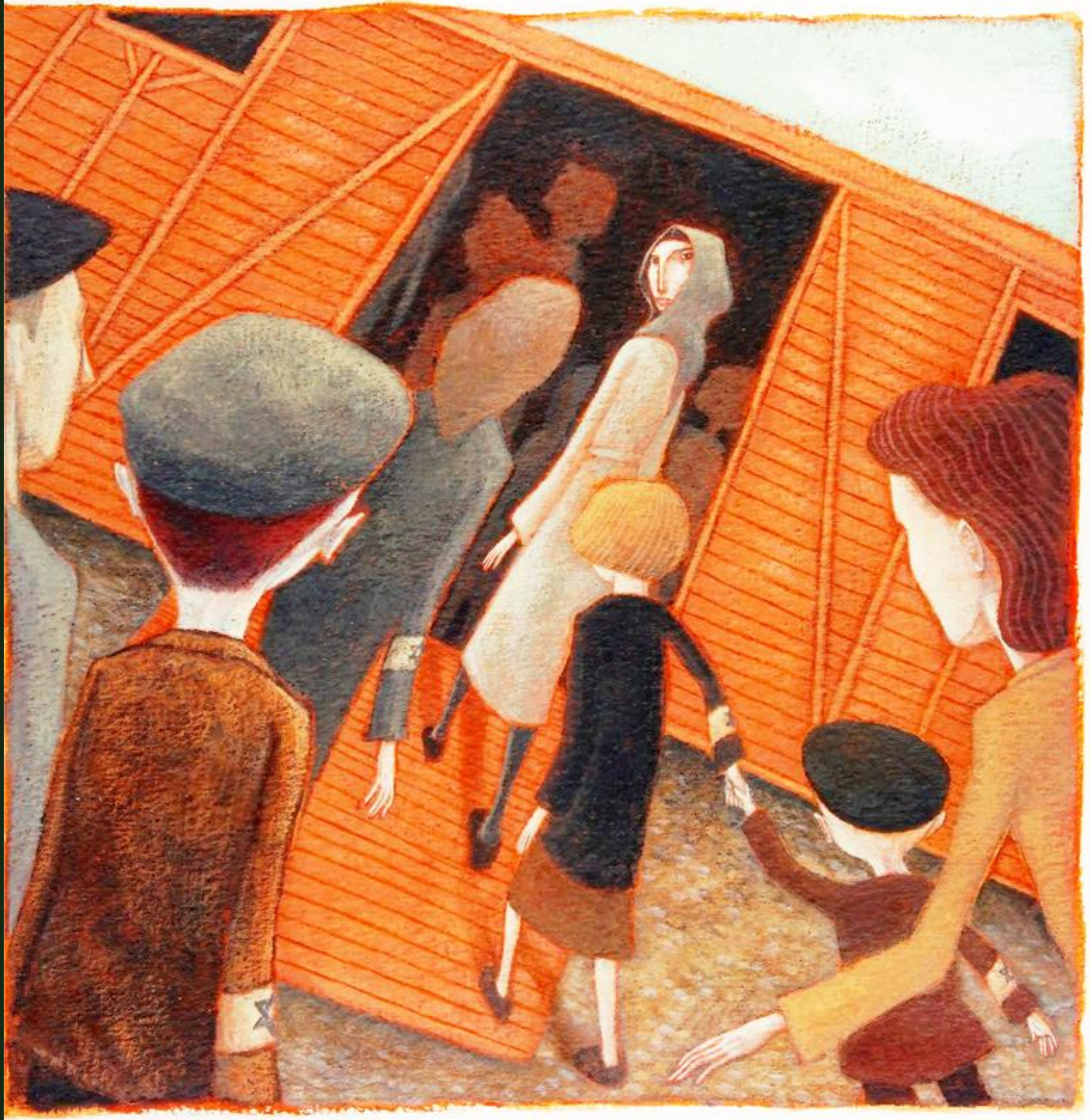
चीखें ऊपर उठीं और ठंडी सुबह की हवा में धुएं के गुबार की तरह गायब हो गईं.

मैं अपनी उम्र के हिसाब से काफी ऊंचा था, लेकिन फिर भी मैं ग्यारह साल का एक लड़का था. मैं अपनी माँ के पतले शरीर से लिपट गया. "माँ, मैं तुम्हारे साथ ही चलूंगा," मैं फुसफुसाया.

पर माँ ने मुझे अपने बड़े भाइयों की ओर धकेल दिया, और वो खुद एक खुली ट्रेन की बोगी की ओर चल पड़ीं. आँखें आगे की ओर. शरीर अकड़ा हुआ. सिर ऊँचा. "हरमन," माँ ने कहा. "अब समय आ गया है कि तुम्हारे एक आदमी बनने का."

वह आखिरी बार था जब मैंने अपनी माँ को देखा.





जब मेरी बारी आई, तो मेरी ट्रेन तेज़ी से आगे बढ़ रही थी.

ट्रेन मुझे ले गई. गर्म शरीर, गर्म आँसू, मुझे जकड़ रहे थे.

मेरा दिमाग शब्दों से भर गया. माँ.

मैं कहाँ जा रहा हूँ? माँ.

मुझे क्या करना है? माँ. मेरी देखभाल कौन करेगा? माँ...

मैंने इंतज़ार किया. अपनी माँ के जवाब का इंतज़ार किया.





जब ट्रेन रुकी, तो गार्ड ने मेरी बाँह पकड़ी. उसने मुझे अंधेरे में उतार दिया. रात की हवा में गोलियों की आवाज़ गूंजने लगी. मेरे कपड़े उतार दिए गए और मेरी तलाशी ली गई. मुझे एक यूनिफ़ॉर्म और काम सौंपा गया.

"बैरक में जाओ," एक गार्ड चिल्लाया.

मेरे पैर आगे बढ़े. मेरा शरीर आंसुओं से भर गया. मेरे चारों ओर छवियाँ घूम रही थीं. मेरी माँ खाना बना रही थी. मेरे पिता पियानो बजा रहे थे. मेरा कुत्ता मेरी बगल में लिपटा हुआ था.

मैंने अपने भाई को कसकर पकड़ लिया. "मैं घर जाना चाहता हूँ."

मेरे भाई ने जवाब दिया, उसकी आवाज़, पतली, सपाट थी.

"अब यही घर है."





कैदी शिविर में मेरे दिन भोर से शुरू होते थे. हम कतार में खड़े होते. मार्च करते. कोई भोजन नहीं. ठंड से कोई सुरक्षा नहीं. केवल काम. मेरे हाथों से खून बहता था. मेरा पेट भूख से गुड़गुड़ाता था.

पहले, मैंने दिखावा करने की कोशिश की.

जब मैं कारखाने में काम करता था, तो मैंने खुद को अपने घर के पास पार्क में खेलने की कल्पना की. जब मुझे भूख लगती, तो मैं अपनी माँ के खाना पकाने की याद करता. जब मुझे ठंड लगती, तो मैं खुद से कहता कि वे सुन्न उँगलियाँ मेरी नहीं बल्कि किसी और की हैं.



रात को मुझे सूप दिया गया. बिल्कुल पानी जैसा सूप.

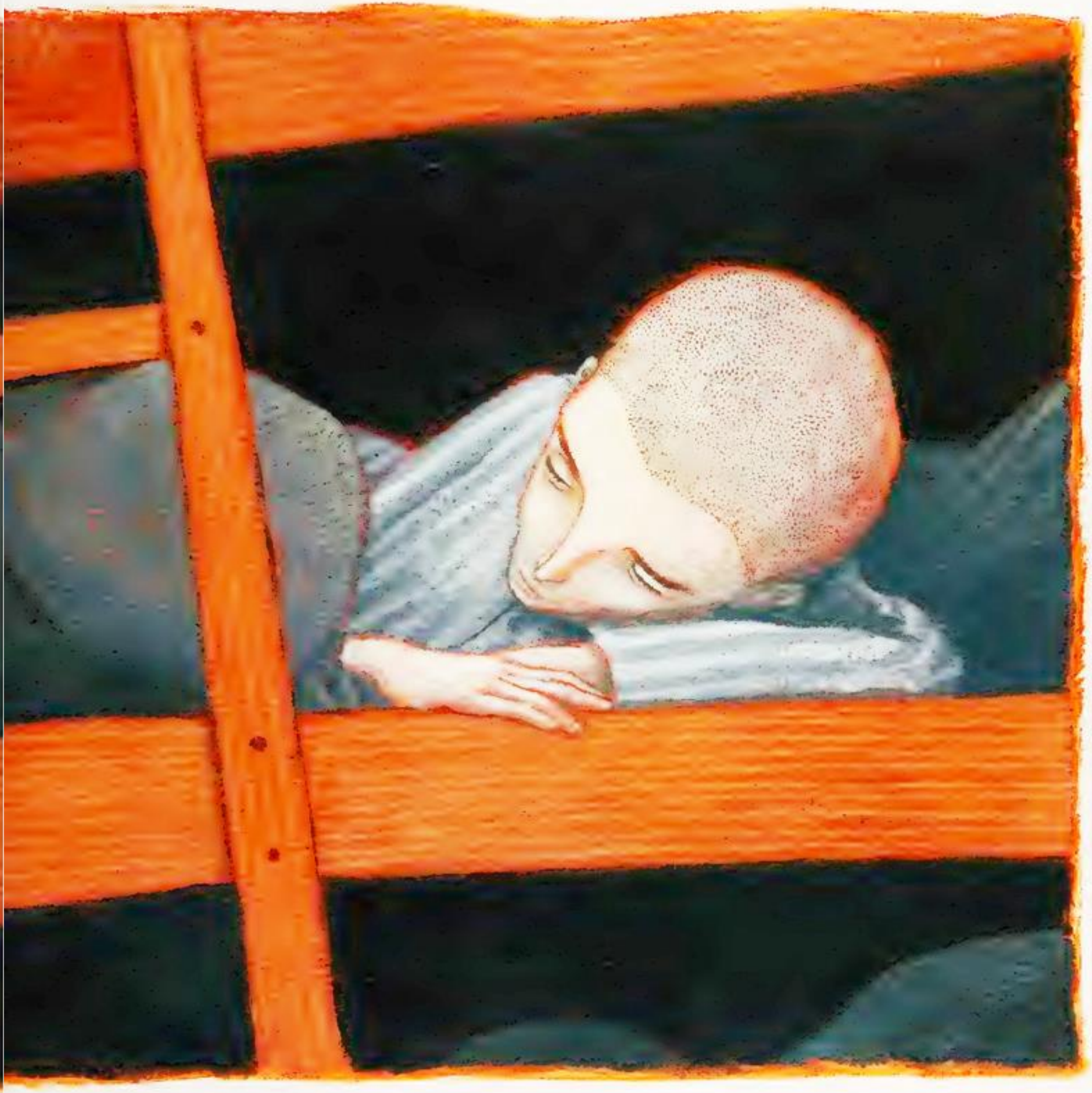
मैं एक शेल्फ पर सो गया. मेरा पतला शरीर सैकड़ों लोगों के बीच दबा हुआ था.

मुझे घर की छोटी-छोटी चीज़ें याद आती रहती थीं. एक तकिया. एक शौचालय. एक टूथब्रश

बड़ी चीज़ें. माँ. हमेशा माँ.

"माँ," मैं हर रात पूछता था "तुम मुझे कब सुलाने आ रही हो?" फिर मैं इंतज़ार करता रहता.

ठंडा. थका हुआ. भूखा. आशावान. माँ का इंतज़ार करता हुआ.



एक रात, माँ मेरे पास आई. एक सपने में कोमल. निश्चित स्थिर.

"चिंता मत करो, हरमन." माँ की कोमल आवाज़ ने मुझे सुकून दिया.

"एक परी आकर तुम्हें बचाएगी."

दो दिन बाद, वह प्रकट हुई. लड़की परी. परी लड़की. प्रकाशवान.

चमकदार, वो बाड़ के दूसरी तरफ थी.

मैं करीब गया. मेरी परी लड़की असली थी.

"क्या तुम्हारे पास कुछ खाना है?" मैं फुसफुसाया.





मेरी परी लड़की ने सिर हिलाया. हम देखते रहे, इंतज़ार करते रहे.

एक गलत कदम का मतलब था मौत. मेरी मौत. उसकी मौत.

जब सही समय आया, तो उसने बाड़ के पार से एक सेब फेंका.

मेरी उंगलियाँ उस सेब के चारों ओर मुड़ गईं. चुपचाप. कृतज्ञता से.

"कल," परी ने फुसफुसाया.





मेरी परी लड़की फिर से प्रकट हुई अगले दिन.

और उसके बाद हर दिन.

वो हमेशा देखती, इंतज़ार करती, और फेंकती थी.

हमेशा एक सेब.





परी लड़की और मैं शायद ही कभी बात करते थे. मैं उसके बारे में कुछ नहीं जानता था सिवाय इसके कि वह एक दयालु, बहादुर खेत में काम करने वाली लड़की थी. उसका नाम क्या था?

वह मेरे लिए अपनी जान जोखिम में क्यों डाल रही थी?

युद्ध घसिटता चला गया. दिन पर दिन बीते. महीने पर महीने बीते. मेरा शिविर बीमारी और भुखमरी से भर गया. लेकिन मेरी परी लड़की ने मुझे भोजन देकर सहारा दिया. मेरी परी लड़की ने मुझे उम्मीद से भर दिया.

आखिरकार, युद्ध समाप्त हो गया. बहुत से लोग उस दौरान मर गए थे, लेकिन मैं जीवित था. आज़ाद. एकदम मुक्त.

मैं आखिरी बार बाड़ के पास गया. वह वहाँ इंतज़ार कर रही थी. "तुम मेरी परी लड़की हो," मैंने कांटेदार तार के बीच से कहा.

मैंने उसकी आँख में एक आंसू देखा. मैंने अपनी परी लड़की की आंख में आंसू देखा.





युद्ध के बाद, मैं अपने भाइयों के साथ इंग्लैंड चला गया,

अब मैं कैदी शिविर से मुक्त था लेकिन अब मैं अपने अतीत का कैदी था. मेरे दिमाग में छवियाँ भर गईं. युद्ध. शिविर. माँ. मेरा पुराना जीवन. मेरी परी लड़की.

मैंने काम किया, पढ़ा, अध्ययन किया. मैंने अतीत को पीछे छोड़ने के तरीके खोजने की कोशिश में सालों बिताए.

जब मैं एक जवान आदमी बन गया, तो मैं अमेरिका में एक नए जीवन जीने के लिए चला गया.



मैं न्यूयॉर्क पहुंचा. वहां सब कुछ नया, अपरिचित था. पुराने जीवन की यादें मेरे चारों ओर लिपटी हुई थीं. उन्होंने मुझे कसकर जकड़ लिया. मैं अक्सर सोचता था कि मैंने क्या पाया और क्या खोया.

मैं अक्सर माँ के बारे में सोचता था.

एक रात, माँ सपने में मेरे पास आई.

वैसा ही सपना जो मैंने सालों पहले कार्य शिविर में देखा था.

"चिंता मत करो, हरमन." माँ की कोमल आवाज़ ने मुझे शांत किया.

"एक परी तुम्हें बचाएगी."





दो दिन बाद, एक दोस्त ने मुझे डबल डेट पर आमंत्रित किया.

"तुम्हें वो लड़की पसंद आएगी," उसने डिनर के लिए जाते समय कार में कहा.

मुझे वह पसंद आई. एक नर्स. दयालु. होशियार. हरी आँखें, जीवन से भरी हुई.

उनमें कुछ ऐसा था जो मुझे जाना-पहचाना लगा.

उसने कहा कि उसका नाम रोमा है. उसने अतीत और युद्ध के दौरान अपने जीवन के बारे में भी बताया. वो एक खेत पर काम करती थी. अपने परिवार की पहचान छिपाने के लिए वो जर्मनी के एक छोटे से गाँव में काम करती थी.





मैं उस गाँव को जानता था. "मैं वहाँ एक शिविर में कैदी था," मैंने रोमा से कहा.

"मैं उस कैंप में एक लड़के के लिए रोज़ाना सेब लेकर जाती थी." रोमा ने मुझे बताया कि कैसे वह दिन-ब-दिन, महीने-दर-महीने बाड़ के पास जाती थी.

मैंने कैंप के उस लंबे, दुबले-पतले लड़के के बारे में सोचा, जो मैं खुद कभी था.

मैंने अपनी माँ के बारे में भी सोचा, जिसने वादा किया था कि एक परी आकर मुझे बचाएगी.

क्या वो बहुत पहले की मेरी परी लड़की हो सकती है?

डिनर के बाद, रोमा और मैं रेत पर चले. रेत. समुद्र के झाग.

डूबता सूरज. मुझे जानना था कि क्या वह वही थी.

अनिश्चित. भयभीत. आशावान, स्थायी.

"रोमा.. जिस लड़के के लिए तुम सेब ले गई थीं...क्या उस लड़के के आखिरी शब्द थे, 'तुम मेरी परी लड़की हो'?"





रोमा मुस्कुराई. जैसे ही मैंने उसकी आँखों में देखा, मुझे एक आंसू दिखाई दिया.

"तुम मेरी परी लड़की हो," मैंने रोमा से धीरे से कहा.

"और मैं तुम्हारा लड़का हूँ."

